Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2021, VOL- 9/68

जनपद अमरोहा (उत्तर प्रदेश) में कॉटन वेस्ट उद्योग का विकास, सम्भावनाएं एवं उससे उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याएं– एक भौगोलिक अध्ययन

महीपाल सिंह, Ph. D.
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष भूगोल
गुलाब सिंह हिन्दू (पी0जी0) कालेज चांदपुर स्याऊ (बिजनौर) पिन– 246725

Paper Received On: 21 DEC 2021
Peer Reviewed On: 31 DEC 2021
Published On: 1 JAN 2022

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

किसी विशेश क्षेत्र में भारी मात्रा में सामान का निर्माण/उत्पादन या वृहद रूप से सेवा प्रदान करने के मानवीय कर्म को उद्योग कहते हैं। उद्योगों के कारण गुणवत्ता वाले उत्पाद सस्ते दामों पर प्राप्त होते हैं। जिससे लोगों के रहन–सहन के स्तर में सुधार होता है और जीवन सुविधाजनक होता चला जाता है।

औद्योगिक युग आधुनिक युग का मौलिक आधार है। यही कारण है कि आधुनिक युग औद्योगिक युग का प्रतीक बन गया है। आज विश्व के प्रायः समस्त देश औद्योगीकरण की ओर अग्रसर हो रहे हैं क्योंकि औद्योगीकरण किसी राष्ट्र की प्रगति एवं सम्पन्नता का केवल आधार ही नहीं, बल्कि उसके आर्थिक विकास का मापदण्ड भी माना जाता है। विश्व के जितने भी विकसित राष्ट्र हैं वे सब औद्योगीकृत देशों की श्रेणी में गिने जाते हैं। इसके अतिरिक्त जो राष्ट्र अभी विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में नहीं गिने जाते हैं, किन्तु विकास के पथ पर आगे बढ़ चुके हैं, वे सब औद्योगीकरण के द्वारा ही अपने आर्थिक विकास के लिए प्रयत्नशील हैं। पिछली पांच दशकों में अनेक विकासशील राष्ट्रों के द्वारा औद्योगीकरण की दिशा में पर्याप्त प्रगति भी की गयी है। वस्तुतः औद्योगीकरण आर्थिक एवं सामाजिक विषमताओं से ग्रसित अनेक पिछड़े हुए राष्ट्रों के नव–निर्माण एवं उत्थान के लिए आशा की एक ऐसी किरण के समान है जो उन्हें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है।

मुरादाबाद मण्डल के पाँच जनपदों में जनपद अमरोहा गंगा के मैदान का एक अभिन्न अंग है जो कि क्षेत्र में बहने वाली नदियों द्वारा निक्षेपित जलोढ़ द्वारा निर्मित है। जनपद अमरोहा का अक्षांशीय विस्तार 28^0 25′ उत्तर से 29^0 14′ उत्तर अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 77^0 58′ पूर्व से 78^0 40′ पूर्व देशान्तर के मध्य से है। अध्ययन क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 2249 वर्ग कि.मी. है।[1] यह सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

का 0.90 प्रति ात भू–भाग है। जनपद अमरोहा की अधिकांश सीमाएं प्राकृतिक है। गंगा नदी इसकी पश्चिमी सीमा को निर्धारित करती है और हापुड़, बुलंद ाहर तथा मेरठ जनपद से अलग करती है। उत्तर में जनपद बिजनौर तथा पूर्व में जनपद मुरादाबाद व सम्भल जनपद हैं। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण में जनपद बदायूँ स्थित है।

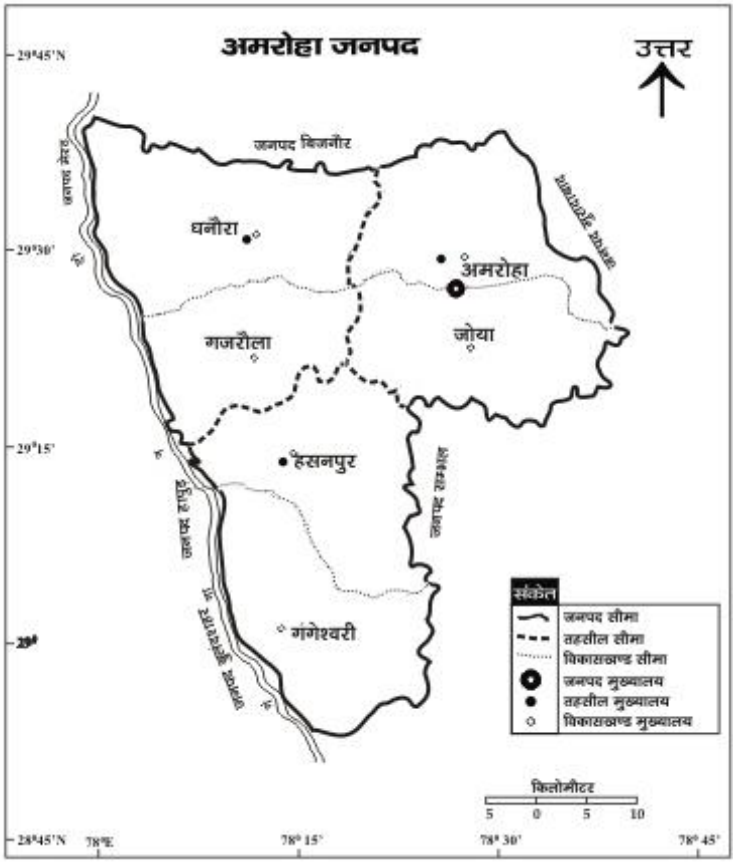

जनपद अमरोहा संरचनात्मक दृष्टि से जलोढ़ मैदान का एक अंग है जिसमें जलोढ़ निक्षेप बहुलता से पाये जाते हैं। यह मैदान, गंगा, और उनकी सहायक नदियों के निक्षेप से निर्मित है। यह मैदान हिमालय का अग्रर्गत है। इस मैदान में नदियों द्वारा लाये गये अवसाद का औसतन 500 मीटर गहरा निक्षेप है। अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण भाग गंगा, रामगंगा तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा किये गये निक्षेपों से निर्मित है। अध्ययन क्षेत्र में पायी जाने वाली जलोढ़ मिट्टी का निर्माण, बालू, चीका और सिल्ट के मिश्रण से हुआ है। यह बालू, चीका और सिल्ट हिमालय श्रेणियों से नदियों द्वारा लायी गयी है। हसनपुर तहसील में मोटे कणों और बालू से युक्त प्राचीन जलोढ़ मिट्टी पायी जाती है। अपवाह तन्त्र की दृष्टि से गंगा नदी प्रमुख सतत्वाहिनी नदी है जो अपनी सहायक नदियों के साथ क्षेत्र में बहती है।

जनपद अमरोहा गंगा मैदान का एक भूभाग होने तथा प्राचीन काल से ही सघन जनसंख्या का क्षेत्र होने के कारण मानव विकास को आकर्षित करता रहा है जिसमें अमरोहा सबसे प्राचीन नगर है। अध्ययन क्षेत्र की 2001 की जनसंख्या 1499068 थी जो 2011 में बढ़कर 1838771 हो गयी। इस मध्य जनसंख्या वृद्धि दर +22.66 प्रति ात रही है।[2]

क्षेत्र में जनसंख्या वितरण एवं घनत्व में अत्यधिक विभेद दर्शनीय है। जनगणना 2011 के अनुसार जनपद अमरोहा का घनत्व 818 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. रहा है, जो देश के घनत्व 382 से बहुत अधिक है।[3] क्षेत्र में 2001 में विकासखण्डवार सर्वाधिक घनत्व जोया विकासखण्ड में 702 है। इसके बाद हसनपुर 601 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है जिसका मुख्य कारण इन विकासखण्डों में कृषि भूमि की

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अधिकता सिंचित साधनों की बाहुल्यता यातायात के साधनों की सुलभता तथा अन्य सामाजिक आर्थिक सुविधाओं का होता है। सबसे कम घनत्व धनौरा विकासखण्ड में हैं जो कि 385 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है[4] जिसका मुख्य कारण मिट्टी की कम उर्वरता, रोजगार के साधनों की कमी यातायात साधनों की विरलता तथा बाजार की दूरी आदि प्रमुख कारण कम घनत्व के लिए उत्तरदायी हैं।

अध्ययन क्षेत्र जनपद अमरोहा एक कृषि प्रधान जनपद है। जनपद में 2018–19 में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 216879 हेक्टेयर है जिसमें 21001 हेक्टेयर वनों के अन्तर्गत है। जनपद में कृष्य बेकार भूमि 110 हेक्टेयर, परती भूमि 261 हेक्टेयर, ऊसर एवं कृशि के अयोग्य भूमि 405 हेक्टेयर, कृशि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि 19575 हेक्टेयर, चारागाह 165 हेक्टेयर, उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियां 102 हेक्टेयर तथा भाुद्ध बोया गया क्षेत्र 175260 हेक्टेयर है।[5] जनपद का अधिकांश भाग कृषित भूमि के अन्तर्गत आता है सिंचाई सुविधाओं का विकास नवीनतम तकनीकों और जनसंख्या वृद्धि से खाद्यान्नों की बढ़ती मांग के कारण कृषित भूमि के क्षेत्रफल में निरन्तर वृद्धि है। जनपद में विकासखण्ड स्तर पर कृषि क्षेत्र में अत्यधिक भिन्नता है।

प्राचीन काल से ही भारत एवं उसके बहुत से क्षेत्र अपनी तकनीकी दक्षता, अधिक संगठन और औद्योगिक श्रेष्ठता के लिए विश्व विख्यात रहे हैं। ब्रिटिश शासन काल के पूर्व उद्योगों का विकास हो चुका था अर्थात स्थानीय मांग पर आधारित उद्योगों, शिल्प, वस्तुएं, सूती कपड़ा, बर्तन, लकड़ी, लोहे, चमड़े की वस्तुये सोने–चांदी के आभूषण निर्माण आदि का विकास हो चुका था। प्राचीनकाल में जनपद अमरोहा के औद्योगिक विकास की कोई भी स्पष्ट तस्वीर हमारे सामने नहीं है। वैदिक साहित्य तथा उसके बाद के साहित्य में कहीं– कहीं अस्पष्ट विचार इस क्षेत्र के उद्योगों के विषय में दिखाई पड़ते हैं। ब्रिटिशकाल में तो इन निर्माण इकाईयाँ का वास्तव में रिकार्ड रखा जाने लगी।

अध्ययन क्षेत्र में स्वतन्त्रता पूर्व कपड़ा बुनाई उद्योग घरेलू एवं लघु उद्योगों के रूप में मुस्लिम बुनकरों द्वारा किया जाता था। 18वीं शताब्दी में अमरोहा हस्त निर्मित उच्च स्तरीय कपड़े के उत्पादन के लिये प्रसिद्ध था। अमरोहा, हसनपुर एवं नौगावां सादात में कपड़े की भिन्न–भिन्न किस्में तैयार की जाती थीं। इसके अतिरिक्त हसनपुर में खद्दर के कपड़े बुनने का प्रचलन था जिसे स्थानीय भाषा में गाढ़ा कहा जाता था। अध्ययन क्षेत्र में मकान बनाने के लिए ईंटों का प्रयोग किया जाता है। अतः स्थानीय मिट्टी संसाधन की खुदायी कर ईंट भट्टों को जगह–जगह देखा जा सकता है। जिनकी स्थिति स्वतन्त्रता पूर्व की है। जनपद में स्वतन्त्रता पूर्व ईंट भट्टों की संख्या 100 से भी अधिक थी। अमरोहा नगर में हैण्डीक्राफ्ट के रूप में लकड़ी के बर्तन, ढोलक, पीढ़ी, खेल–खिलौने एवं शो–पीस बनाने का कार्य स्वतन्त्रता पूर्व से ही होता आ रहा है। कृष्याधारित उद्योग में चीनी एवं खाण्डसारी उद्योग की स्वतन्त्रता पूर्व से ही चल रहा है जोकि अध्ययन क्षेत्र की घरेलू मांग के साथ–साथ अन्य क्षेत्रें को भी निर्यात किया जाता था। अध्ययन क्षेत्र में चलने वाले उद्योगों में मिट्टी के बर्तन, बीड़ी उद्योग, लकड़ी का सामान, टोपी

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पर कढ़ाई, कालीन निर्माण कपड़ों की छपाई, मूढ़ा, पीढ़ी आदि ग्रामीण उद्योग बहुत पुराने उद्योग हैं जोकि आज भी अध्ययन क्षेत्र में जगह–जगह क्षेत्रीय लोगों के रोजगार के साधन बने हुए हैं।[6]

जनपद में अमरोहा परम्परागत रूप से एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। क्षेत्रीय स्तर पर औद्योगिक अवस्थिति का विश्लेषण औद्योगिक क्रियाकलापों के स्थानिक प्रबन्ध के विश्लेषण में अन्तर्निहित है। वर्तमान में विभिन्न स्तरीय उद्योगों में चीनी मिले, हैण्डलूम अन्य लघु उद्योग, हैण्डीक्राफ्ट उद्योग तथा खादी और ग्रामाद्योग प्रमुख हैं। अध्ययन क्षेत्र में 21 वृहद एवं मध्यम स्तरीय औद्योगिक इकाइयाँ हैं जिनमें उत्पादित वस्तुयें शुगर, खाद्य अखाद्यय तेल, सूती धागा, एसिड, सिंगल सुपर फास्फेट, रासायनिक पदार्थ, आटोपार्ट्स, टायलेट शॉप, रैपिग एवं बल्क ड्रग्स आदि हैं।[7] इनके अतिरिक्त ग्रामीण एवं लघु औद्योगिक इकाईयाँ की संख्या 527 है जिसमें 463 लघु और 60 ग्रामीण औद्योगिक इकाइयाँ हैं। लघु इकाइयाँ में 998 तथा ग्रामीण औद्योगिक इकाइयों में 420 श्रमिक कार्यरत हैं। 2002–03 में कारखाना अधिनियम के अन्तर्गत रिर्टन प्राप्त कारखानों की संख्या 35 थी जिनमें 5155 श्रमिक कार्यरत थे।

अध्ययन क्षेत्र में चीनी एवं खाण्डसारी उद्योग एवं उनके गौण उत्पाद खाद्य तेल एवं चर्बी का विनिर्माण अनाज मिलों के उत्पादन सम्बन्धी उद्योग कागज एवं दफ़्रती उद्योग, बीड़ी उद्योग, पंखा उद्योग, पीढ़ी एवं ढोलक उद्योग आदि कृषि एवं वनीय पदार्थो पर आधारित उद्योग हैं। वस्त्र उद्योग, कृ षि यन्त्र उद्योग, सामान्य इन्जीनियरिंग उद्योग स्थानीय बाजार पर आधारित उद्योग हैं। सूती वस्त्र उद्योग अध्ययन क्षेत्र का बहुत पुराना उद्योग है जिसमें अधिकांश मुस्लिम बुनकर कार्यरत थे इसके प्रमुख केन्द्र अमरोहा एवं हसनपुर थे यह उद्योग वर्तमान में पतन की ओर अग्रसर है जबकि कृषि यन्त्र निर्माण एवं सामान्य इन्जीनियरिंग उद्योग लगातार बढ़ रहा है। बाहरी बाजार पर आधारित उद्योगों में जनपद का ढोलक एवं कालीन निर्माण, चाय एवं मसाले प्रसोधन, पुष्प उद्योग आदि हैं। मुख्य उद्योगों पर आधारित उद्योगों में शराब उद्योग, कागज व दफती निर्माण, चावल की भूंसी से तेल निकालना शुगर उद्योग की मड से खाद निर्माण, मूंगफली व धान के छिलके से कार्बन की प्राप्ति आदि उद्योग है।

अध्ययन क्षेत्र में गजरौला औद्योगिक क्षेत्र लगभग 60000 आबादी वाले क्षेत्र में स्थित औद्योगिक क्षेत्र है। यहाँ लगभग एक दर्जन से भी अधिक वृहद एवं लघु स्तरीय औद्योगिक इकाइयाँ हसनपुर, गजरौला एवं मुरादाबाद दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 24 के सहारे–सहारे स्थित है। यहाँ सर्वप्रथम औद्योगिक इकाई शिवालिक सेल्यूलोज के नाम से प्रारम्भ हुई। (वर्तमान में यहाँ इकाईयों का लगना जारी है।) गजरौला की सभी बड़ी औद्योगिक इकाइयाँ अध्ययन क्षेत्र को भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रें की श्रेणी में सम्मिलित कराने में अपनी मुख्य भूमिका निभा रही है। जिस कारण अध्ययन क्षेत्र की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान बनी हुई है। अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक विकास के कारणों में बाजार की निकटता भी प्रमुख है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या का बहुल्य उत्पादन को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका अदा कर रहा है। जनसंख्या अधिक होने के कारण क्षेत्र में श्रमिकों की उपलब्धता भी सहायक सिद्ध हो रही है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अमरोहा नगर में कपड़े की कटिंग से रूई बनाने की मशीन पूरे हिन्दुस्तान में सिर्फ अमरोहा में ही बनाई जाती है ये मशीन लकड़ी से बनाई गई है, इसमे ज्यादातर हिस्सा लकड़ी का और कुछ हिस्सा लोहे का जैसे गरारी, पुली, बेलन, शाफ्ट, चेन, बयेरिंग लगे होते हैं इस मशीन को बनाने में श्री अब्दुल रहीम उर्फ मिस्त्री सिमेंट व मिस्त्री एजाज अहमद सिद्दीकी, मौहल्ला लाल मस्जिद उल्लेखनीय हैं। इस उद्योग को उनका पूरा–पूरा सहयोग मिला है। यह व्यवसाय लगभग 100 साल पुराना है। सन् 1900 से 1925 तक अमरोहा में रूअड़ का काम होता था। रूअड़ को लोग अपनी धुनकी से धुनकर तैयार किया करते थे फिर उस से कपड़ा तैयार होता था, जिससे लिहाफ, गद्दा बनाया जाता था। इस काम को जिन लोगों ने किया उनमें प्रमुख नबी बख्श, जलालउद्दीन अब्दुल्ला हैं। 1925 से 1950 के दौरान कार्डिंग मशीन को जेनरेटर से चलाया जाता था और इस उद्योग ने व्यापार का रूप ले लिया। इस व्यवसाय से जुड़े लोगों में प्रमुख थे लाला मुकुट लाल जैन व राम रत्न जैन 1950 से 1975 के बीच इस व्यवसाय में प्रमुख लोग थे यामीन ब्रादर्स (पूर्व चेयरमेन), हाफिज फरीद एण्ड संस व बाबू आले हसन जाफरी, हाजी अब्दुल करीम। 1970 के आसपास ये व्यवसाय बहुत तेजी से परवान चढ़ा और अमरोहा हैण्ड स्पूनयार्न की एक बहुत बड़ी मण्डी बन गया। यहाँ से चरखे से तैयार सूत बारीक व मोटर शाहजहाँपुर, बदौही, मिर्जापुर आदि शहरों को ट्रक के ट्रक जाते थे।[8]

आजादी से पहले की बात है, अमरोहा के एजाज ने कार्डिंग मशीन या ये कहें के रुई धुनने की मशीन से कॉटन वेस्ट कारोबार की शुरुआत हुई। महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने वाले इस कारोबार ने लोगों को बेहतर भविष्य दिया। खासतौर पर मुस्लिम वर्ग के लोगों ने कारोबार में दिलचस्पी ली। अमरोहा हिन्दू वर्ग में सबसे पहले स्व– श्री नियादरमल ने कदम रखा था। पंजाब से लिहाफ, कच्चा माल आता था। कॉटन से गद्दे आदि बनते थे। कारोबार ने अमरोहा में ऊँचाईयों के नये आयाम गढ़े। नतीजा, वर्ष 2000 से 2005 तक कारोबार के अच्छा पीरियड रहा। कॉटन वेस्ट कारखानों की तादाद 800 की संख्या पर पहुंच गई। लो ग्रेड की माल की अधिक मांग थी इसलिए अधिक मात्र में प्रोडक्शन होता है। 5 से 7 तरह के अच्छे किस्मों का माल तैयार होता है। चूंकि इसकी मांग कम है इसलिए प्रोडक्शन भी कम ही था। अमरोहा के लिए ये बेहद सुखद पल थे कि इन्हीं वर्षों में कारोबार ने पश्चिमी एशिया में नई पहचान दी। अब परिस्थितियाँ ऐसी हो गई हैं कि कारोबार तेजी से घट रहा है। डिमांड करने वाले राज्यों में कारखाने लग गए, कच्चे माल की कमी, पंगु बिजली व्यवस्था, मजदूरों का टोटा, ऐसी कई मुश्किलों ने कारोबार पर ग्रहण लगा दिया है।[9]

अध्ययन क्षेत्र जनपद अमरोहा में स्थापित कॉटन वेस्ट इकाईयाँ प्रदूषण बढ़ा रही है। क्षेत्र में जल प्रदूषण इन इकाइयों के कारण चरम सीमा तक पहुँच चुका है। जनपद अमरोहा के जिन क्षेत्र में कॉटन वेस्ट इकाईयाँ स्थापित हैं वहाँ का भू–गर्भिक जल लगातार प्रदूषित होता जा रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि इन इकाईयों में जब कपड़े की कतरन को तेजाब से धोया जाता है और इनका रंग उतारा जाता है तो शेष बचे पानी को इन इकाईयों में धरातल पर न डालकर बोरिंग व पाइप के माध्यम

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से भू–गर्भ जल में पहुँचाया जाता है जिससे भू–गर्भ जल प्रदूषित हो रहा है। शोधार्थी ने जब क्षेत्र के अमरोहा नगर के कल्याणपुर रोड, दानिशमन्दान, दाऊद सराय रोड के लोगों से बातचीत की तो यह बात सामने आयी कि हैण्डपैम्प का पानी उन क्षेत्रें में पीला आता है जिससे उन लोगो को गम्भीर बामीरियों का सामना करना पड़ता है। जल प्रदूषण का भयंकर परिणाम क्षेत्र के स्वास्थ्य के लिए एक गम्भीर खतरा है। शोधार्थी के अनुमान के अनुसार जनपद अमरोहा की कॉटन वेस्ट इकाईयों के समीप होने वाली दो–तिहाई बीमारियाँ प्रदूषित पानी से होती हैं। जल प्रदूषण का प्रभाव मानव स्वास्थ्य जल द्वारा जल के सम्पर्क से एवं जल में उपस्थित हानिकारक रासायनिक पदार्थों द्वारा पड़ता है। क्षेत्र में पेयजल के साथ रोग वहन बैक्टीरिया, वायरस प्रोटोजोवा एवं कृषि मानव शरीर में पहुँच जाते हैं और हैजा, टाइफाइड, शिशु प्रवाहिका, पेचिश, पीलिया, अतिसार जैसे भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

कॉटन वेस्ट के कारखानों से जहाँ एक ओर जल प्रदूषण क्षेत्र के लिए एक समस्या है वहीं वायु प्रदूषण इन कारखानों के आस–पास रहने वाले परिवारों के लिए गम्भीर स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें पैदा करता है जहाँ एक ओर इन कारखानों में काम करने वाले मजदूरों, कॉटन वेस्ट के लिए कतरन छांटने वाली महिलाओं के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। वहीं कॉटन वेस्ट कारखानों से निकलने वाले सूक्ष्म रूई के कणों के वातावरण में जाने से आस–पास रहने वाले परिवारों के स्वास्थ्य पर गम्भीर प्रभाव पड़ते हैं। कॉटन वेस्ट कारखानों से निकलने वाले रूई के छोटे–छोटे कण हवा में फैल कर स्वांस के माध्यम से मानव के शरीर में पहुँचते हैं और मनुष्य के श्वसन तंत्र को गम्भीर रूप से प्रभावित करते हैं इनसे मनुष्य को टी.बी. और दमा जैसे गम्भीर रोग पैदा होते हैं। ज्यादा फायदा उठाने के चक्कर में कारखाना मालिक यहाँ मशीनों पर काम करने वाले कारीगरों तथा कतरन छाँटने वाली महिलाओं और बच्चों को रूई के छोटे–छोटे कणों से बचाव हेतु मास्क भी उपलब्ध नहीं कराते हैं। इससे ये काम करने वाली महिलाएं और बच्चे जल्द टी.बी. और दमा जैसी बामरियों से ग्रस्त हो जाते हैं। कारखाने से निकलने वाले छोटे–छोटे रेशों से क्षेत्र में रहने वाले परिवारों से सभी व्यक्ति प्रभावित होते हैं, परन्तु इन कारखानों से निकलने वाले रूई के रेशों से बूढ़े, बच्चे और कमजोर व बीमार लोग अधिक तथा जल्दी प्रभावित होते हैं। शोधार्थी द्वारा अमरोहा नगर और आस–पास के गाँवों में व्यक्तिगत सर्वेक्षण करने से यह पाया कि इन कारखानों के आस–पास रहने वाले लोग गम्भीर रूप से फेफड़े सम्बन्धी बीमारियों से ग्रसित पाये गये। अध्ययन क्षेत्र में अमरोहा नगर के कल्याणपुर रोड, धनौरा रोड, नई बस्ती, दानिशमन्दान, मीरा सराय रोड, दाऊद सराय रोड, जोया रोड आदि बस्तियों में जहाँ यह कारखाने आवासीय क्षेत्र के मध्य में फैले हैं फेफड़े सम्बन्धी रोगों से ग्रसित लोगों की तादाद अधिक है। वायु प्रदूषण सम्बन्धी समस्याओं के बारे में स्थानीय लोगों से जब पूछताछ की गई तो शोधार्थी ने यह पाया कि इन कारखानों के आस–पास रहने वाले अधिकांश लोग इन कारखानों से निकलने वाले सूक्ष्म रूई के कणों के दुष्प्रभाव से अनभिज्ञ हैं और इससे स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के विशय में कुछ भी जानकारी नहीं रखते। इस सम्बन्ध में विशेष तथ्य यह है कि अमरोहा नगर, जोया और आस–पास के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

क्षेत्रें में यह कारखाने आवासीय क्षेत्रें के आस–पास स्थित हैं और दिन–प्रतिदिन इनकी संख्या बढ़ रही है जो कि क्षेत्र के नागरिकों के लिए एक गम्भीर स्वास्थ्य सम्बन्धी चुनौती है। सरकार, स्वास्थ्य विभाग तथा पर्यावरण विभाग भी इस विषय में कुछ भी करने को तैयार नहीं है आये दिन इन कारखानों में आग लगती रहती है जो कि क्षेत्र के निवासियों और काम करने वालों की जान–माल की हानि की विशेष समस्या है।

कॉटन वेस्ट कारखानों से जहाँ भूमिगत जल व वायु प्रदूषण की समस्या है वहीं कतरनों को साफ करने वाले टैंकों से रिसने वाले जल से मिट्टी के जैविक तत्व का विनाश होता है और मिट्टी के उपजाऊ तत्व समाप्त होते जाते हैं। इसके साथ ही इन कारखानों से निकलने वाली गन्दगी, जो कि कारखाना मालिक इधर–उधर उपजाऊ जमीन पर फैंकते रहते हैं उससे भी मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम होती जाती है। इन कारखानों के आस–पास के क्षेत्रें में चूंकि कृषि प्रधान क्षेत्र स्थित है। अतः वहाँ की उपजाऊ मिटट्ी अपनी उर्वरा शक्ति खोती जा रही है जिसे रोकने के कोई भी उपाय न तो स्थानीय स्तर पर और न ही सरकारी स्तर पर किये जा रहे हैं।

सन्दर्भ

सांख्यिकीय पत्रिका जनपद अमरोहा, 2020।

भारतीय जनगणना 2011, डिस्ट्रिक्ट हाईलाइट पोपुले ान, अमरोहा, 2011।

————————————————तदैव ————————————————

सांख्यिकीय पत्रिका जनपद अमरोहा, 2020।

———————— तदैव ————————

चटर्जी, ए.सी. नोट्स आन द इण्डस्ट्रीज ऑफ द यूनाईटेड प्रोविन्स, इलाहाबाद, पेज–138।

वार्षिक जिला योजना पत्रिका, मुरादाबाद 2009।

मन्सूरी, बी.आर. 'अमरोहा टेक्सटाइल वेस्ट उद्योग', साप्ताहिक–आर्यावर्त केसरी 'जनपद स्मारिका' अमरोहा–ज्योतिबा फूले नगर, उ.प्र. 12–18 सितम्बर, 2011, पृ. 28।

हिन्दी दैनिक 'हिन्दुस्तान' समाचार पत्र, 24 फरवरी 2012 'उड़ान', पृ. 15।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies